

पांच चीनी भाई

क्लैर हचिट बिशप



Five Chinese Brothers

Claire Huchet Bishop

पांच चीनी भाई : क्लैर हचिट बिशप

Five Chinese Brothers : Claire Huchet Bishop

अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

© भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : कुर्ट वाईज़

लेजर ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

पांचवां संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य: 15 रुपये

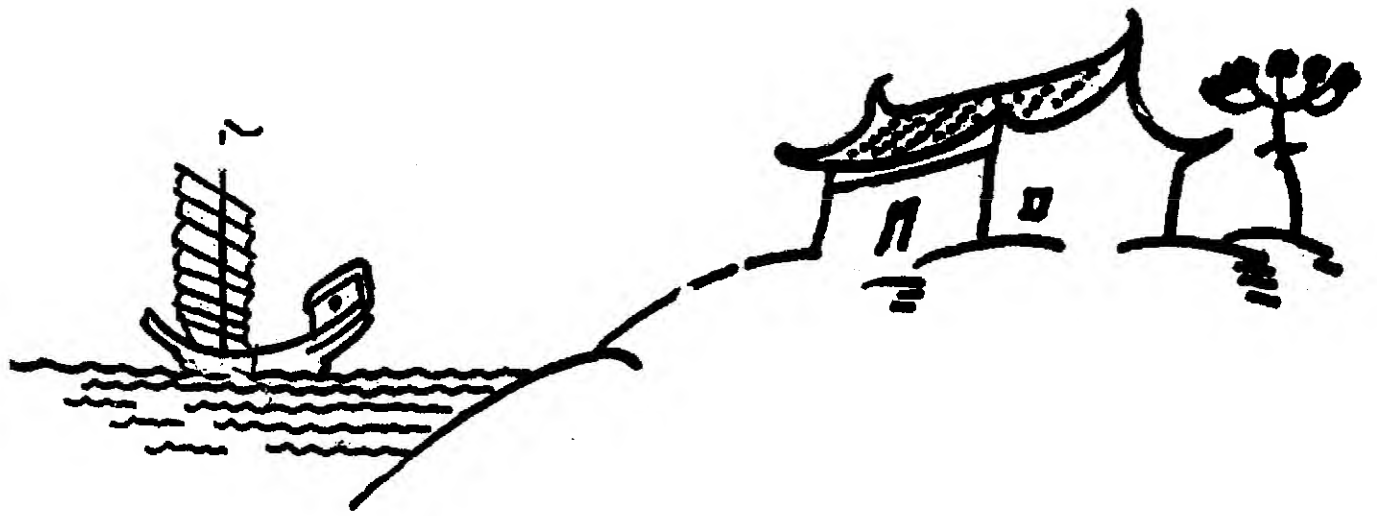
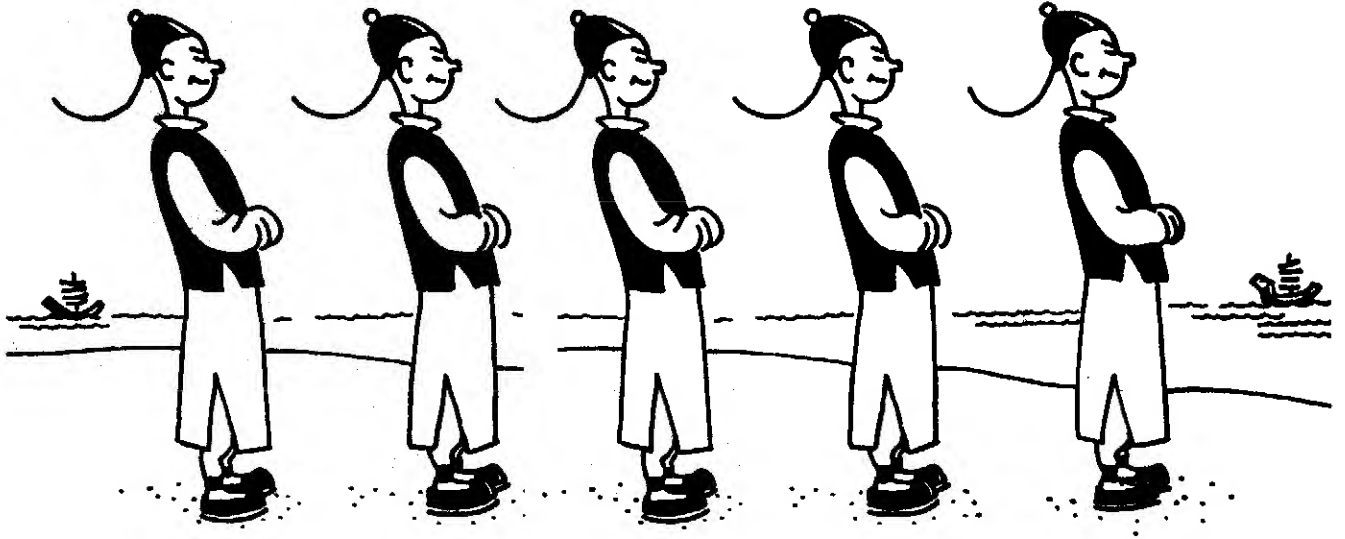
Price : 15 Rupees

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. 11, G-Block
Saket, New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net



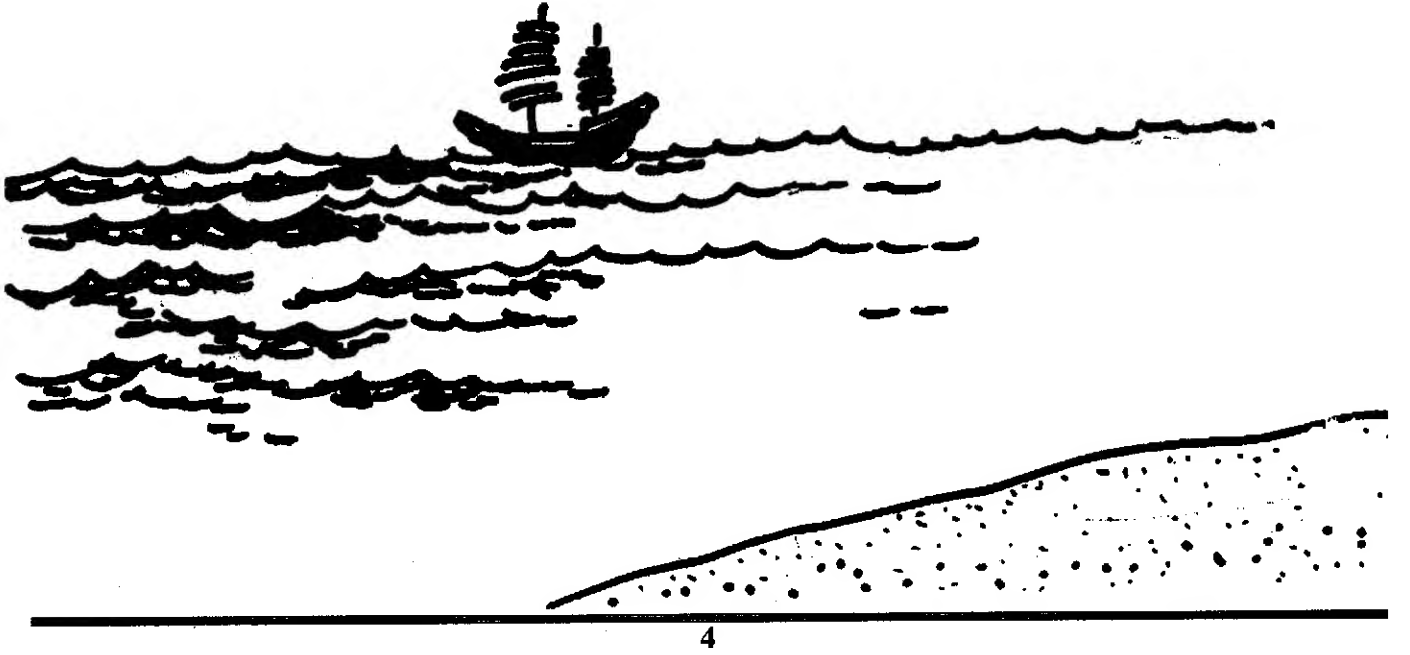


बहुत पुराने ज़माने की बात है।
 चीन में पांच भाई रहते थे।
 उनकी एक खास बात थी।
 पांचों भाई देखने में बिल्कुल एक जैसे लगते थे।

Once upon a time
 there were
 Five Chinese Brothers and
 they looked exactly alike.

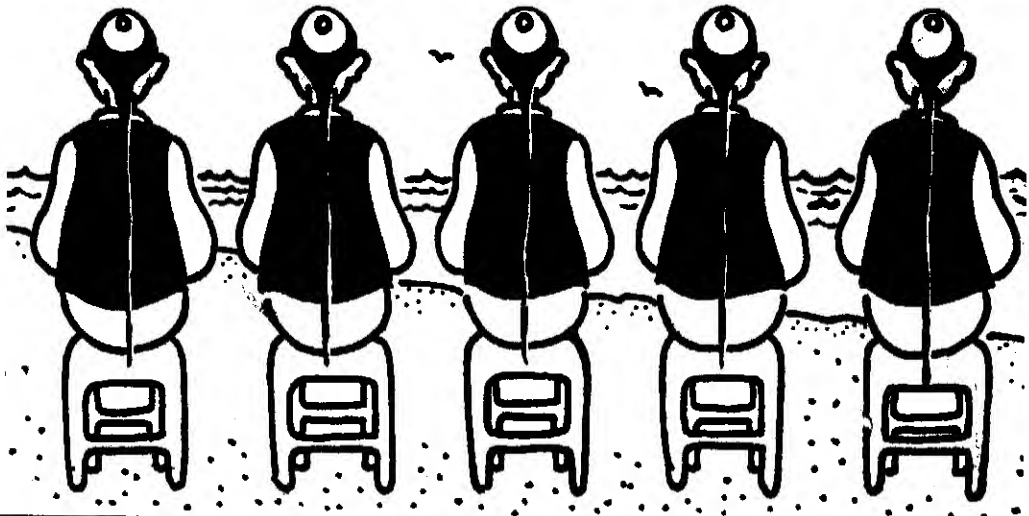
वे सभी अपनी मां के साथ रहते थे। उनका छोटा सा घर, समुद्र के पास था।

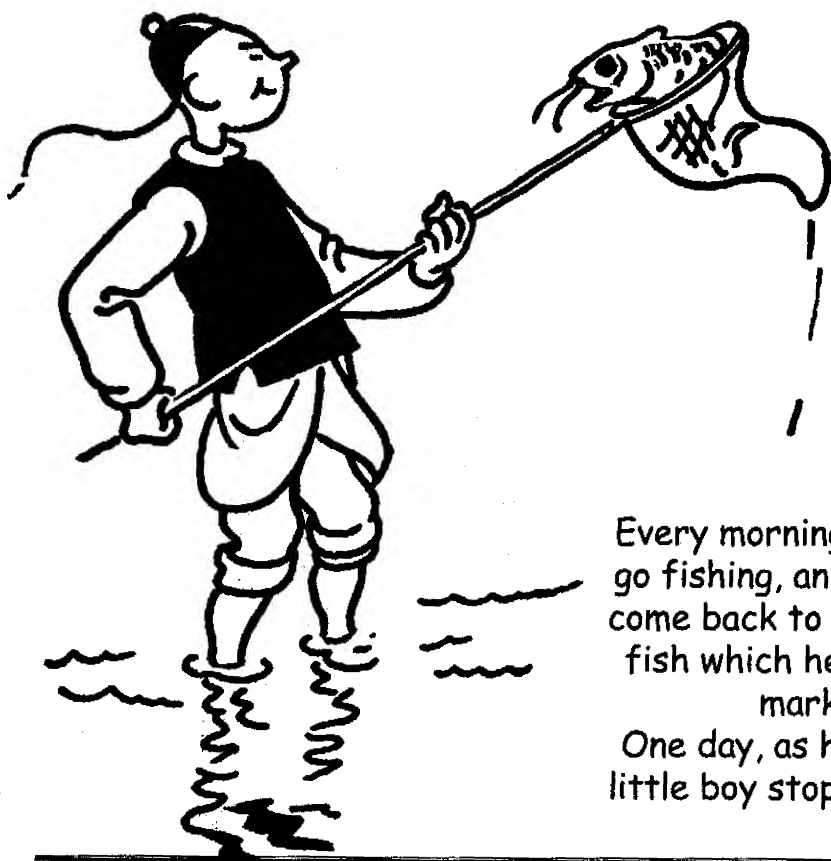
They lived with their mother in a small house not far from the sea.



पहला चीनी भाई पूरे समुद्र को निगल सकता था।
दूसरे चीनी भाई की गर्दन लोहे की बनी थी। तीसरा
चीनी भाई अपनी टांगों को खींचकर लंबा और लंबा
बना सकता था। चौथे चीनी भाई को आग नहीं जला
सकती थी। और पांचवां चीनी भाई अपनी सांस को
जितनी देर तक चाहे रोके रख सकता था।

The First Chinese Brother could swallow
the sea. The Second Chinese Brother had
an iron neck. The Third Chinese Brother
could stretch and stretch and stretch his
legs. The Fourth Chinese Brother could not
be burned. And, The Fifth Chinese Brother
could hold his breath indefinitely.





हर सुबह, पहला चीनी भाई मछली पकड़ने के लिए समुद्र के किनारे जाता था। चाहे मौसम कितना भी खराब क्यों न हो, वो हमेशा ही सुंदर और बेशकीमती मछलियां पकड़ कर लाता था। इन मछलियों को वो गांव की हाट में बड़े ऊंचे दामों पर बेचता था।

एक दिन जब वो बाजार से वापिस आ रहा था तो एक छोटे लड़के ने उसे रोक कर पूछा, "क्या आप मुझे अपने साथ मछली पकड़ने के लिए ले चलेंगे?"

Every morning the First Chinese Brother would go fishing, and whatever the weather, he would come back to the village with beautiful and rare fish which he had caught and could sell at the market for a very good price.

One day, as he was leaving the market place, a little boy stopped him and asked him if he could go fishing with him.

6

"नहीं, यह संभव नहीं है," पहले चीनी भाई ने जवाब दिया। परंतु छोटे लड़के ने बहुत जिद्द करी और हार नहीं मानी। उसने बड़ी आरजू-मिन्नत की। अंत में पहला चीनी भाई राजी हो गया।

"एक शर्त पर," उसने कहा, "तुम्हें मेरी बात को फौरन मानना होगा।" "हां! हां! जरूर," छोटे लड़के ने वादा किया।

अगले दिन सुबह को पहला चीनी भाई और छोटा लड़का दोनों समुद्र के तट पर गए।

"याद रखना," पहले चीनी भाई ने कहा, "तुम मेरे आदेश का तुरंत पालन करना।

मैं जैसे ही इशारा करूँ तुम फौरन वापिस चले आना।"

"हां! हां!" कहकर, छोटे लड़के ने अपना सिर हिलाया।

"No, it could not be done," said the First Chinese Brother.

But the little boy begged and begged and finally the First Chinese Brother

consented. "Under one condition," said he,

"and that is that you shall obey me promptly."

"Yes, yes," the little boy promised.

Early next morning, the First Chinese Brother and the little boy went down to the beach.

"Remember," said the First Chinese Brother, "you must obey me promptly.

When I make a sign for you to come back, you must come at once."

"Yes, yes," the little boy promised.

7

उसके बाद पहले चीनी भाई ने समुद्र के पूरे पानी को पी लिया।

Then the First Chinese Brother swallowed the sea.



8



And all the fish were left high and dry at the bottom of the sea.

And all the treasures of the sea lay uncovered.

The little boy was delighted.

He ran here and there stuffing his pockets with strange pebbles, extraordinary shells and fantastic algae.

पानी खत्म हो जाने से सारी मछलियां समुद्र की तलहटी पर सूखी रेत में फंस गयीं और छटपटाने लगीं। समुद्र का अनमोल खज़ाना साफ़ दिखाई देने लगा। इतनी सुंदर चीज़ें देखकर छोटे लड़के की खुशी का ठिकाना न रहा। वो इधर से उधर दौड़ने लगा और अपनी जेबों में खूबसूरत सीपियां, अद्भुत शंख और नायाब चीज़ें भरने लगा।

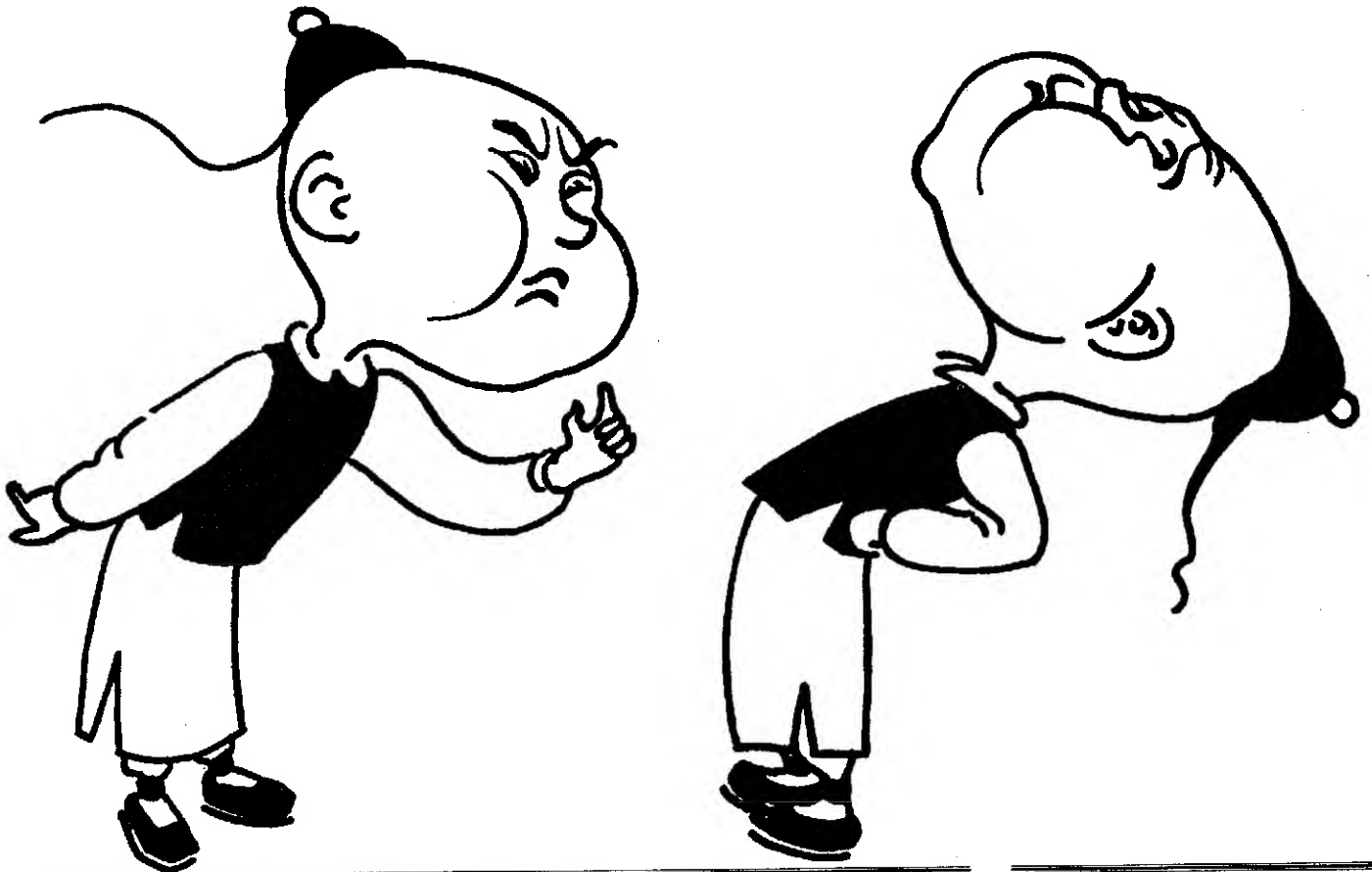


9



इतनी देर में समुद्र के किनारे पर पहले चीनी भाई ने कुछ मछलियां इकट्ठी करीं। अभी तक उसने समुद्र को कसकर अपने मुंह में बंद करके रखा था। परंतु अब वो समुद्र को पकड़े-पकड़े एकदम थक गया था। समुद्र को इस तरह मुंह में पकड़े रखना कोई आसान काम नहीं था। इसलिए उसने अपने हाथ से छोटे लड़के को तुरंत वापिस आने का इशारा किया। छोटे लड़के ने इशारा देखने के बाद भी उसका पालन नहीं किया।

Near the shore the First Chinese Brother gathered some fish while he kept holding the sea in his mouth. Presently he grew tired. It is very hard to hold the sea. So he made a sign with his hand for the little boy to come back. The little boy saw him but paid no attention.





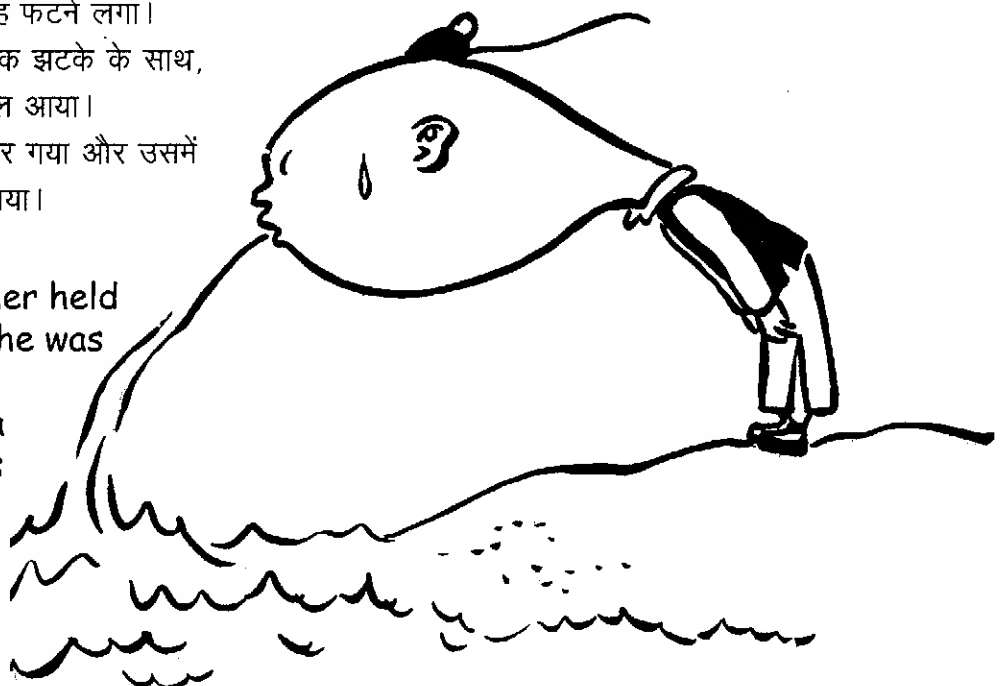
उसके बाद पहले चीनी भाई ने बड़े ज़ोर से अपने हाथ-पैर, हिला-हिलाकर, छोटे लड़के को तट के पास आने का इशारा किया। परंतु क्या उस छोटे लड़के ने उसकी बात मानी? बिल्कुल नहीं। छोटा लड़का अपनी मस्ती में किनारे से और दूर दौड़ने लगा। तब पहले चीनी भाई से नहीं रहा गया। उसे अपने मुंह के अंदर समुद्र उफ़नता हुआ महसूस हुआ। उसने छोटे लड़के को वापिस बुलाने की भरसक कोशिश करी। परंतु छोटे लड़के ने उसका बस मुंह चिढ़ाया और तेज़ी से और दूर भागने लगा।

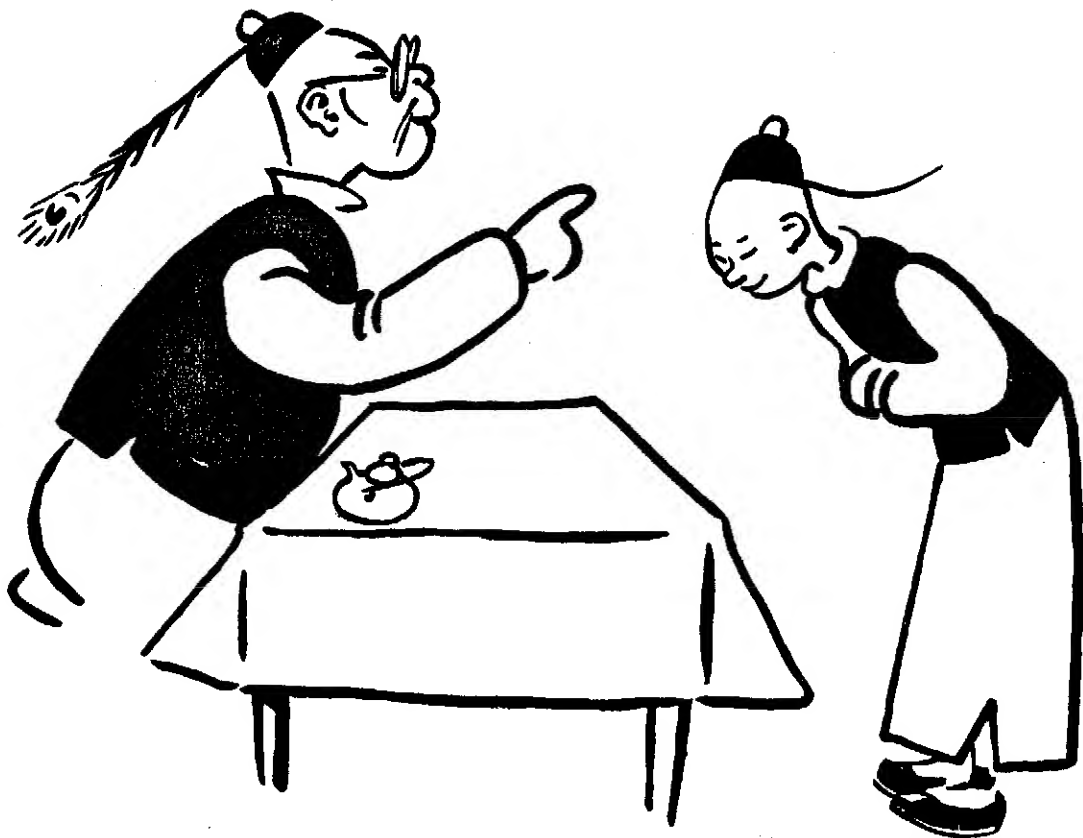
The First Chinese Brother made great movements with his arms and that meant "Come back!" But did the little boy care? Not a bit and he ran further away. Then the First Chinese Brother felt the sea swelling inside him and he made desperate gestures to call the little boy back. But the little boy made faces at him and fled as fast as he could.

पहले चीनी भाई ने समुद्र को अपने मुंह के अंदर पकड़े रखने की पूरी कोशिश करी।
परंतु अंत में दर्द से उसका मुंह फटने लगा।
और अगले ही क्षण, सारा समुद्र, एक झटके के साथ, उसके मुंह से बाहर निकल आया।
सूखा समुद्र अब पानी से लबालब भर गया और उसमें वो छोटा लड़का डूब गया।

The First Chinese Brother held the sea until he thought he was going to burst.

All of a sudden the sea forced its way out of his mouth, went back to its bed
... and the little boy disappeared.





जब पहला चीनी भाई अकेला ही गांव लौटा तो उसे गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया।

कचहरी के जज ने उसका गला काट देने का आदेश दिया।

फ्रांसी वाले दिन पहले चीनी भाई ने जज साहिब से विनती की,

“महाशय, कृपा करके मुझे अपनी मां से आखिरी बार मिलने का मौका दें, जिससे कि मैं उनसे अलविदा कह सकूँ।”

“यह तो हर मुजरिम का हक है,” जज साहिब ने कहा और उसे अपनी मां से मिलने की इजाजत दे दी।

अनुमति मिलने के बाद पहला चीनी भाई घर गया

और उसकी जगह पर दूसरा चीनी भाई वापिस आ गया।

When the First Chinese Brother returned to the village, alone, he was arrested,
put in prison and condemned to have his head cut off.

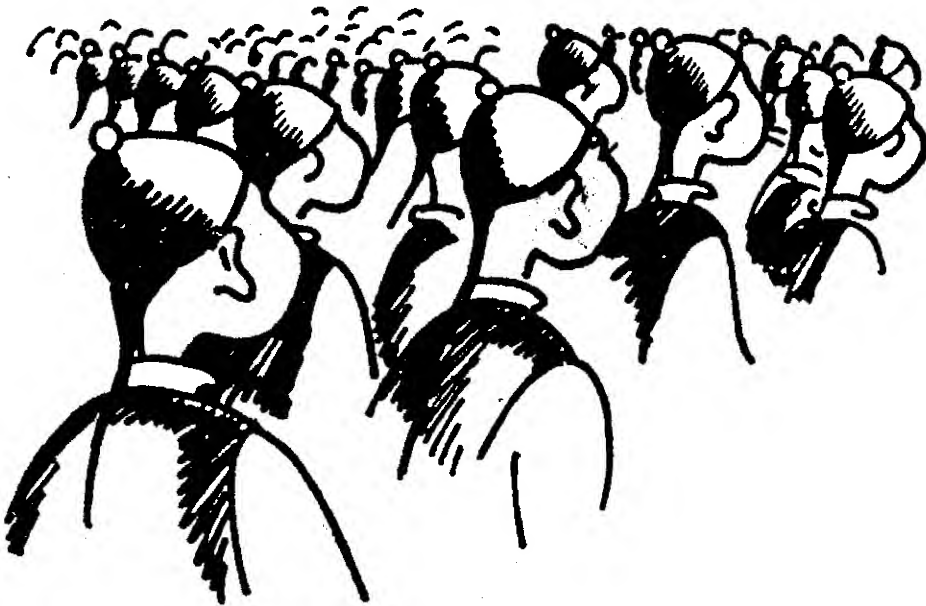
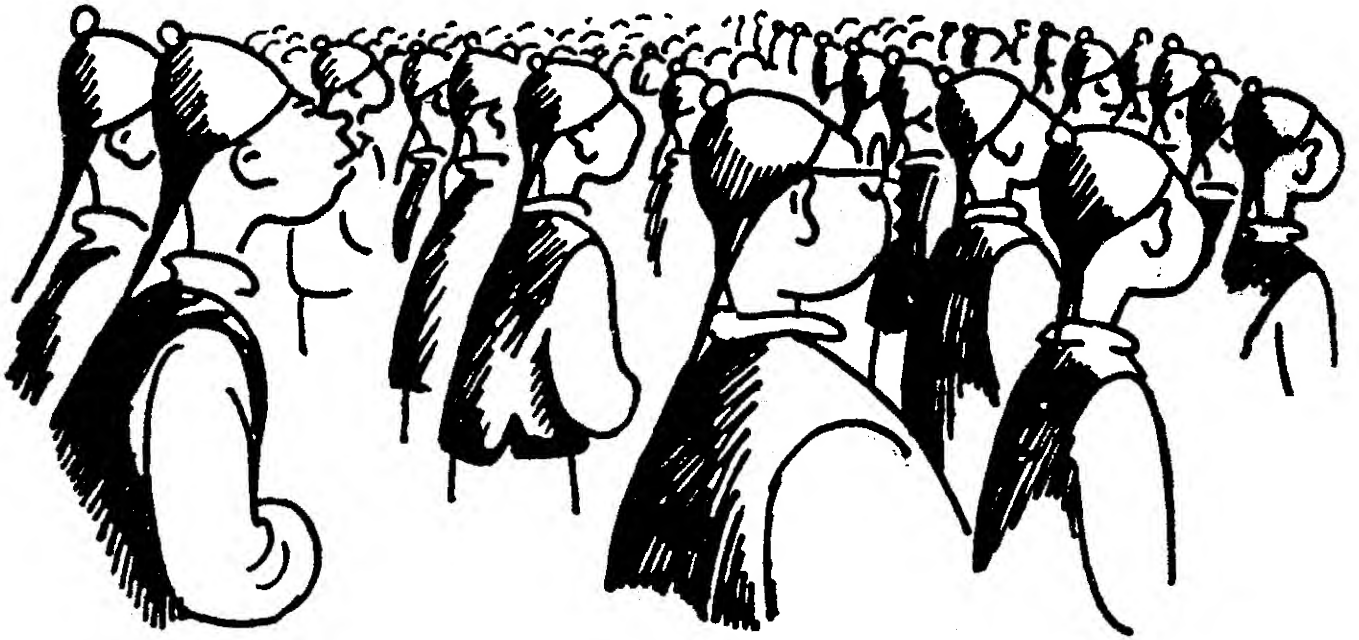
On the morning of the execution he said to the judge:

"Your Honour, will you allow me to go and bid my mother good-bye?"

"It is only fair," said the judge.

So the First Chinese Brother went home

and the Second Chinese Brother came back in his place.



सिर कटने की घटना को
देखने के लिए पूरा का पूरा गांव ही
चौपाल पर उमड़ पड़ा।

जल्लाद ने अपनी तलवार से
मुजरिम की गर्दन पर
जोर का वार किया।

All the people were
assembled on the village
square to witness the
execution.

The executioner took
his sword
and struck a mighty blow.



18

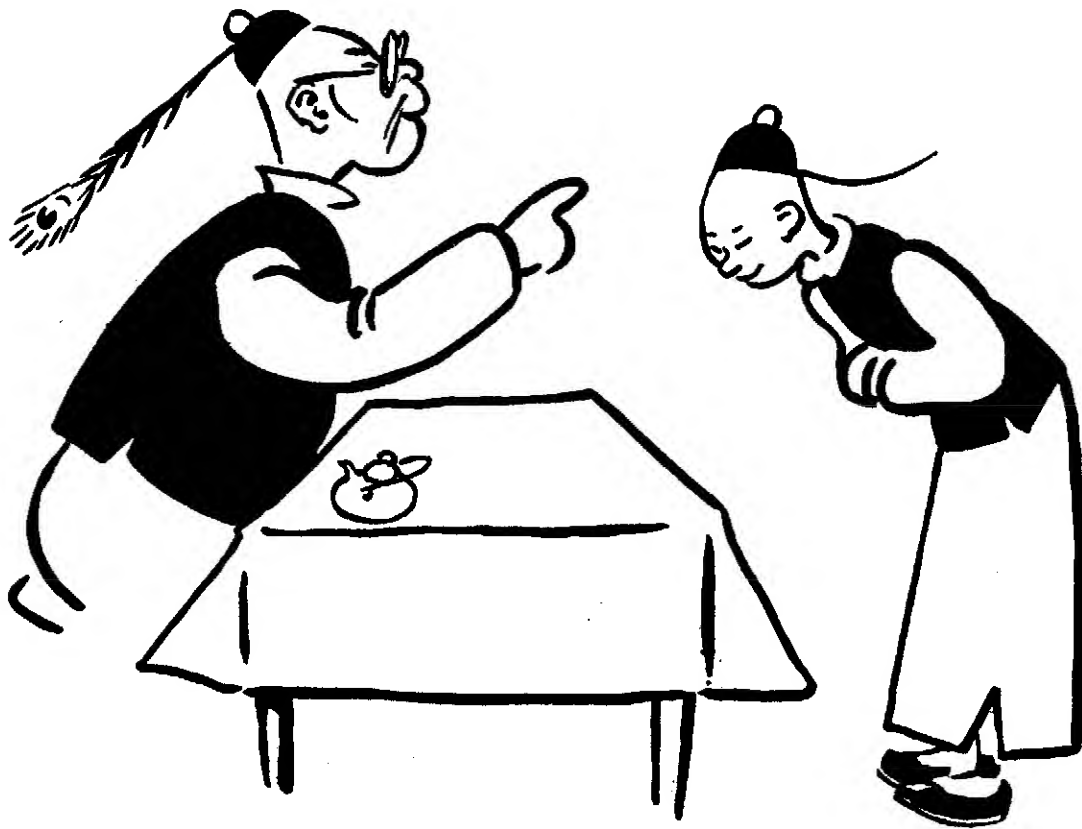
परंतु दूसरा चीनी भाई हंसते हुए उठ खड़ा हुआ
जैसे उसे कुछ हुआ ही न हो।

दूसरे चीनी भाई की गर्दन लोहे की बनी थी
और उसे कोई भी काट नहीं सकता था।

उसे ज़िंदा देखकर गांववालों को बहुत गुस्सा आया
और उन्होंने उसे समुद्र में डुबोने का निर्णय लिया।

But the Second Chinese Brother got up and smiled.
He was the one with the iron neck
and they simply could not cut his head off.
Everybody was angry and they decided
that he should be drowned.

19



On the morning of the execution,
the Second Chinese Brother said to the judge:

"Your honour, will you allow me to go
and bid my mother good-bye?"

"It is only fair," said the judge.

So the Second Chinese Brother went home....
and the Third Chinese Brother came back in his place.
He was pushed on a boat which made for the open sea.

सजा वाले दिन दूसरे चीनी भाई ने जज साहिब से प्रार्थना की,

"क्या आप मुझे अंतिम बार अपनी मां से नहीं मिलने देंगे?

मैं उनसे आखिरी अलविदा कहना चाहता हूँ।"

"अवश्य, यह तो तुम्हारा हक है," जज साहिब ने कहा।

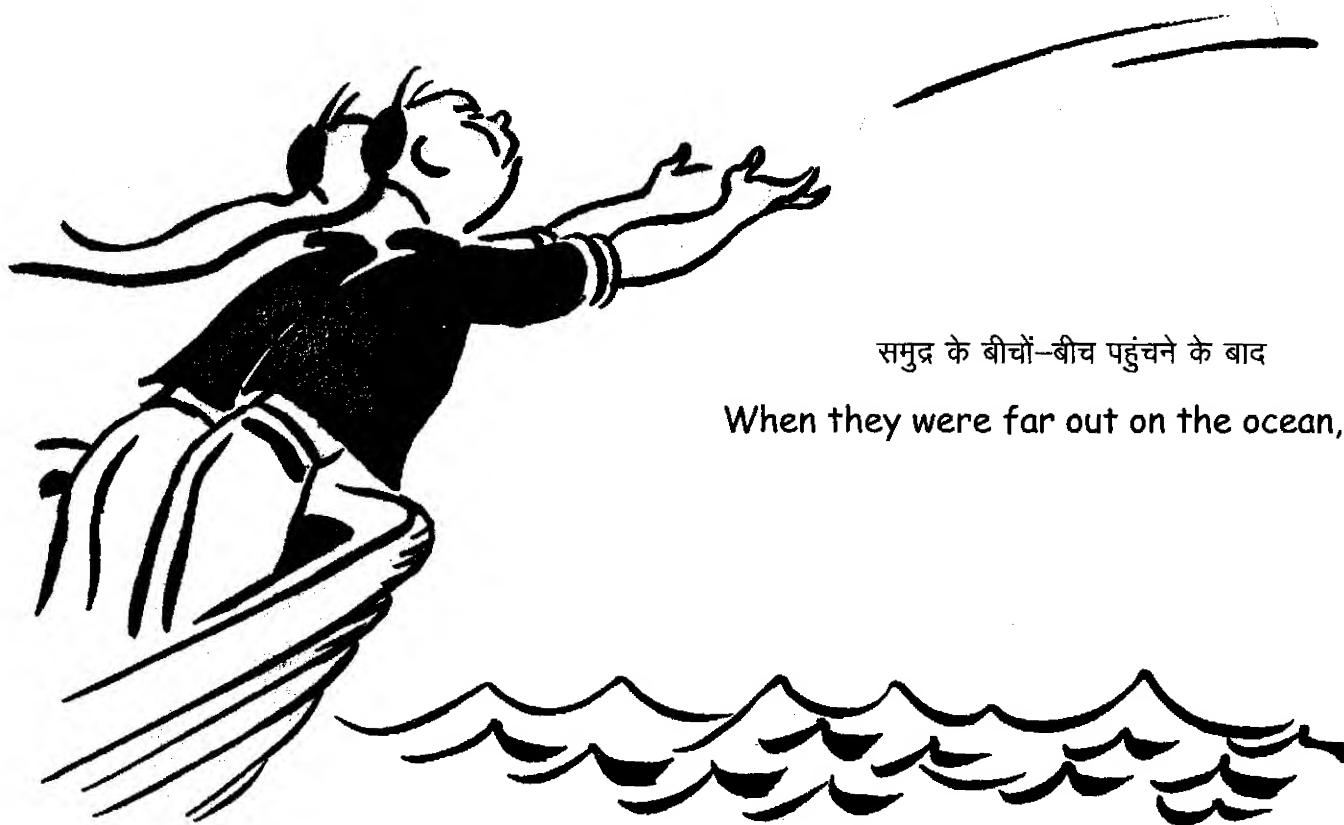
अनुमति मिलने के बाद दूसरा चीनी भाई घर गया

और उसकी जगह पर तीसरा चीनी भाई वापिस आया।

क्योंकि सभी भाई देखने में बिल्कुल एक-समान थे

इसलिए किसी को भी शक नहीं हुआ।

तीसरे भाई को एक बड़ी नाव में समुद्र के बीच ले जाया गया।

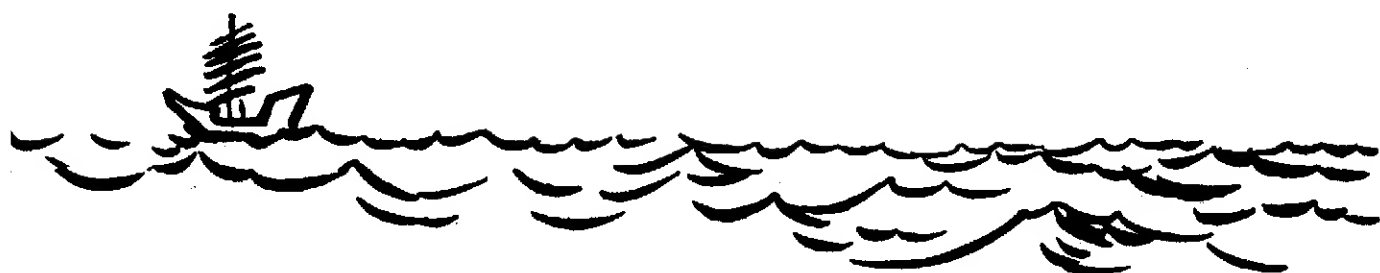


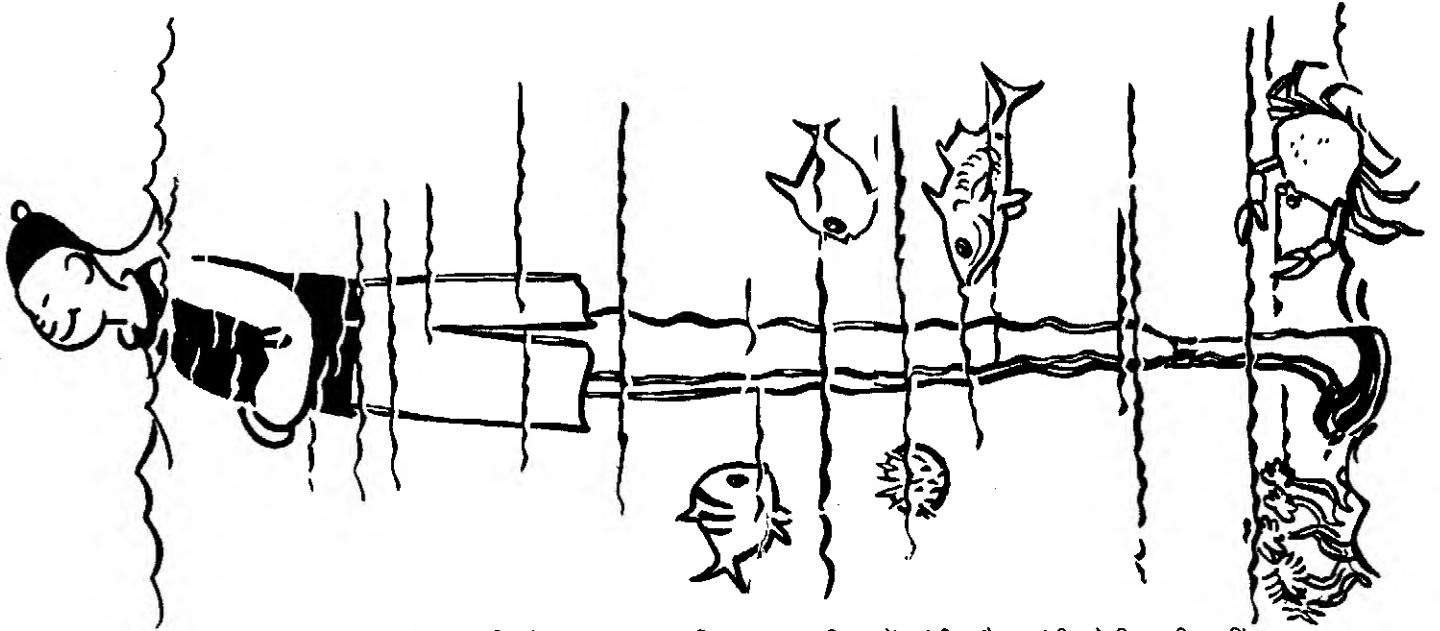
समुद्र के बीचों-बीच पहुंचने के बाद

When they were far out on the ocean,

तीसरे चीनी भाई को
नाव से उठाकर समुद्र
में फेंक दिया गया।

the Third Chinese
Brother was thrown
overboard.





परंतु उसने अपनी टांगों की लंबाई को बढ़ाना शुरू किया। उसकी टांगें लंबी और लंबी होती चली गयीं।

अंत में वो समुद्र की तलहटी को छूने लगीं।

But he began to stretch and stretch and stretch his legs,
way down to the bottom of the sea.

24

लोग उसे देख कर हैरान थे। वो मुस्कुरा रहा था।

उसका चेहरा अभी भी लहरों के ऊपर था। उसे कोई भी डुबो नहीं सकता था।

इस नज़ारे को देखकर सभी गांववाले गुस्से से झट्का गए और उन्होंने उसे ज़िंदा जला डालने का निश्चय किया।

जिस दिन उसे जलाया जाना था उस दिन तीसरे चीनी भाई ने जज साहिब से जाकर प्रार्थना की,

“सर, मरने से पहले मुझे एक बार तो अपनी मां से मिलने और उनसे अलविदा कहने का मौका दें?”

“अवश्य,” जज साहिब ने उसे मां से मिलने की इजाजत दे दी।

तीसरा चीनी भाई घर गया, परंतु उसकी जगह चौथा चीनी भाई वापिस आया।

And all the time his smiling face was
bobbing up and down on the crest of the waves.
He simply could not be drowned.
Everybody was very angry, and they all decided
that he should be burned.

On the morning of the execution,
the Third Chinese Brother said to the judge:
"Your Honour, will you allow me to go and bid
my mother good-bye?"

"It is only fair," said the judge.
So the Third Chinese Brother went home
and the Fourth Chinese Brother came back in his place.



25

चौथे चीनी भाई को एक मजबूत लकड़ी के खंभे से बांधा गया।
फिर खंभे को आग लगा दी गई। इस नजारे को देखने के लिए सारा गांव उमड़ पड़ा।
कुछ समय बाद चारों ओर ऊंची-ऊंची लपटें उठने लगीं।
उस समय चौथे चीनी भाई ने कहा, "यहां तो मुझे बड़ा मज़ा आ रहा है।"
उसकी बात सुनकर लोग चिल्लाए, "और लकड़ी लाओ!"
धीरे-धीरे करके आग की लपटें आसमान को छूने लगीं।
"अब तो मुझे जन्नत का मज़ा आ रहा है!" चौथे चीनी भाई ने कहा।
असल में उसे जलाया ही नहीं जा सकता था।
गांववाले यह सब देखकर गुस्से से आग-बबूले हो गए।
सबने चौथे चीनी भाई को भट्टी में झोंक कर खत्म करने का निर्णय लिया।

He was tied up to a stake.

Fire was set to it and all the people stood around watching it.
In the midst of all the flames they heard him say: "This is quite pleasant."

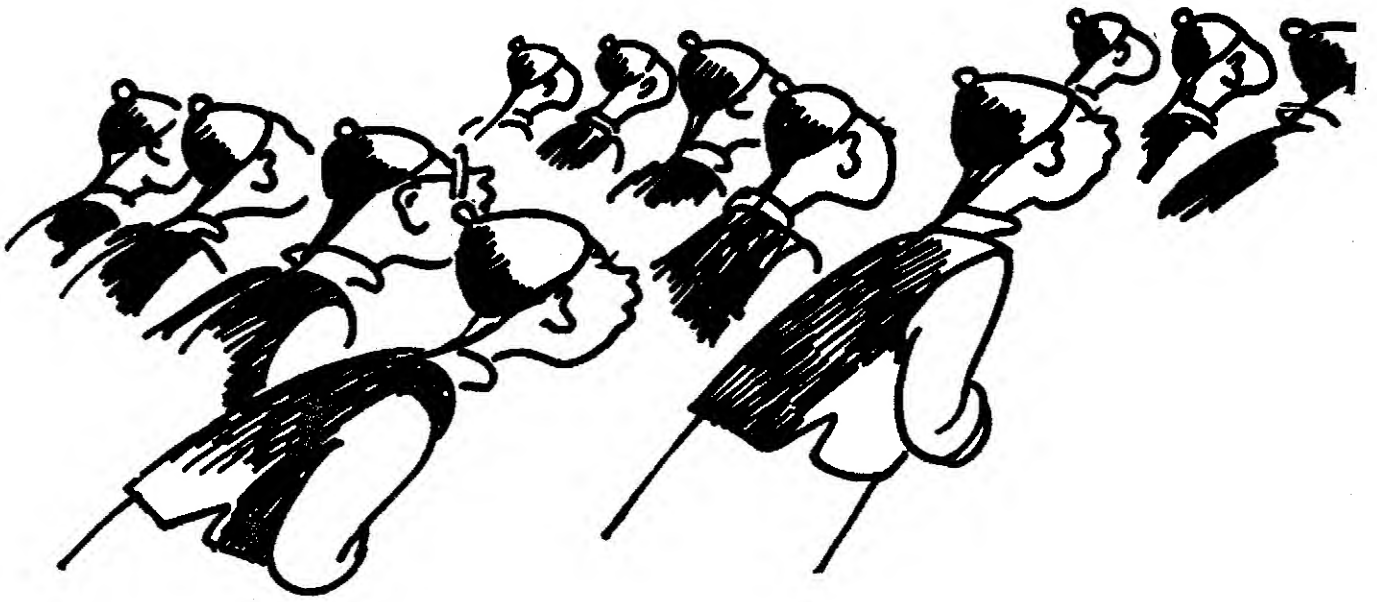
"Bring some more wood!" the people cried.

The fire roared higher.

"Now it is quite comfortable," said the Fourth Chinese Brother,
for he was the one who could not be burned.

Everybody was getting more and more angry every minute
and they all decided to smother him.





गांववाले पूरी रात भट्टी के सामने खड़े रहे।
 उन्हें डर था कि मुजरिम
 उन्हें चकमा देकर कहीं भाग न जाए।

They were not going to be tricked again!
 So they stayed there all night and even a
 little after dawn, just to make sure.

सुबह होने पर लोगों ने भट्टी का दरवाजा खोला और चीनी भाई को बाहर निकाला।

बाहर निकलते ही चौथे चीनी भाई ने अपनी आंखों को मला और कहा,

“वाह! रात को मुझे बहुत मजेदार नींद आई।”

भट्टी में से वो सकुशल निकल आएगा इस बात पर किसी को यकीन नहीं हुआ।

सब लोग आश्चर्यचकित होकर चीनी भाई को टकटकी लगाए देखते रहे।

इतनी देर में जज साहिब भी आ गए और उन्होंने कहा, “हमने तुम्हें मौत के घाट उतारने की पूरी कोशिश करी। परंतु तुम्हें खत्म करना हमारे लिए संभव नहीं हुआ। हो सकता है, तुमने जुर्म किया ही न हो और तुम बेगुनाह हो”।

“हां! हां!” सभी गांववाले एक साथ चिल्लाए।

उसके बाद चीनी भाई को रिहा कर दिया गया और वो अपने घर वापिस चला गया।

Then they opened the door and pulled him out.
And he shook himself and said, "My! That was a good sleep!"

Everybody stared open-mouthed and round eyed.

But the judge stepped forward and said,
"We have tried to get rid of you in every possible way
and somehow it cannot be done.

It must be that you are innocent."

"Yes, yes," shouted all the people.

So they let him go and he went home.

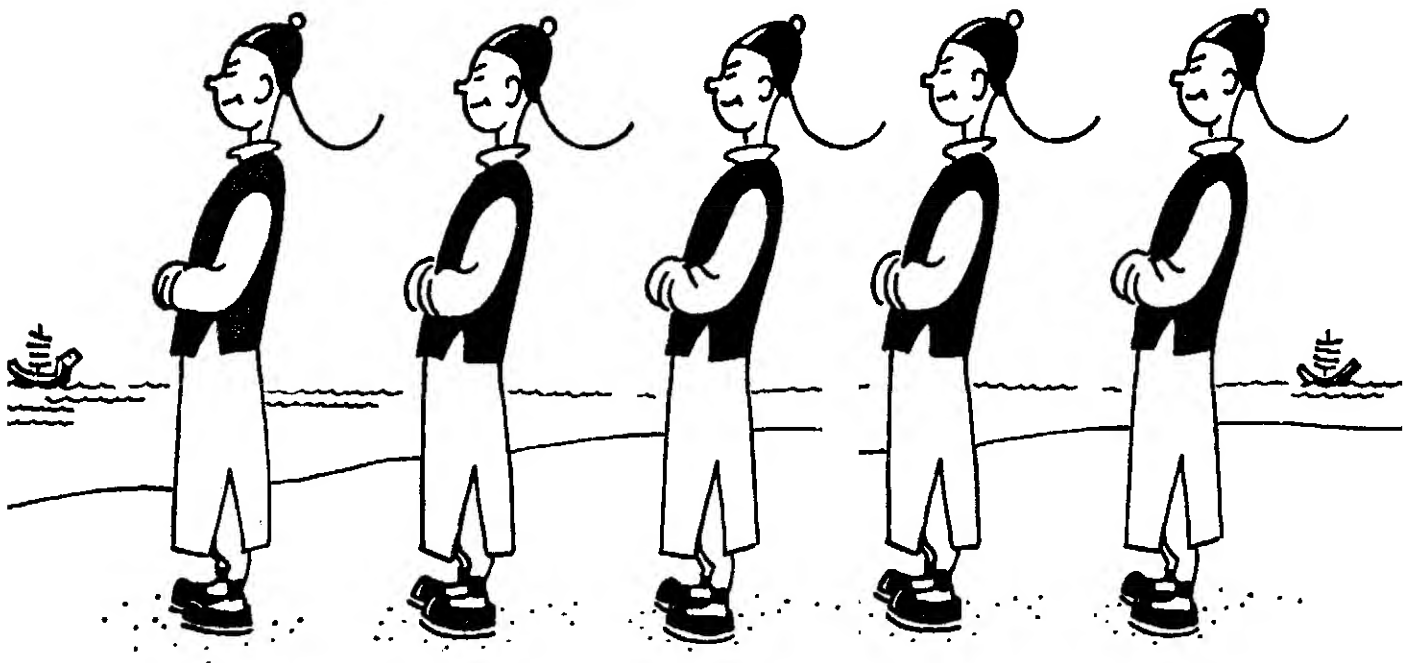




उसके बाद,
पांचों चीनी भाईयों ने
बाकी जीवन
अपनी मां के साथ
आराम से गुजारा।

□□□

And the Five Chinese Brothers
and their mother
all lived together
happily for many years.



जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला



पांच चीनी भाई थे। देखने में बिल्कुल एक समान।

एक भाई को मौत की सजा सुनाई जाती है। एक भाई, दूसरे की जगह ले लेता है।

किसी को भी उन पर शक नहीं होता है। हर भाई में एक विशेष गुण होता है।

इस तरह निर्दोष भाई बच जाते हैं और बाकी जीवन अपनी माँ के साथ खुशी-खुशी बिताते हैं।

यह सदाबहार कहानी बच्चों को बेहद पसंद आएगी।

There were Five Chinese Brothers.

They looked exactly the same.

One brother was wrongly sentenced to death.

On every execution, one brother substituted for the other.

No one suspected them. Every brother had a special quality.

In the end the brothers are saved.

They spend the rest of their life happily with their mother.

An evergreen story.

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 15 रुपये

Price: 15 Rupees